शिरीष के फूल

1. लेखक ने गाँधी और शिरीष की तुलना क्यों की है?
लेखक ने गाँधी और शिरीष को एक समान कठिनाइयों में जीने वाला सरस व्यक्तित्व कहा है। शिरीष भयंकर लू में भी सरस और फूलदार बना रहता है। गाँधी चारो ओर छाए अग्निकांड और खून-खच्चर के बीच में स्नेही, अहिंसक, और उदार बने रहे। इस समानता के कारण लेखक ने इन दोनो को एक समान कहा है।

2. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संयासी) की तरह क्यों माना है?
अवधूत सुख-दुख मे समान भाव से प्रसन्न रहता है और फलता फूलता है, वह भीषण कष्टों और कठिनाइयों के बीच भी अपना जीवन-रस बनाए रखता है, शिरीष का वृक्ष भी आस-पास फैली गर्मी, तपन और लू के बीच सरस रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। इस दृष्टि से दोनो समान है।

3. एक बूढ़ा से किसकी ओर संकेत है? उसकी क्या विशेषता थी?
इसमे महात्मा गाँधी की ओर संकेत है। उनकी विशेषता यह थी कि वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी जीवंत और मस्त बने रह सके।

4. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।
हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के वृक्ष का उदाहरण देकर यह सीख दी है कि जीवन में कितना भी संघर्ष और कोलाहल हो, मनुष्य को अपनी सरसता और

चहुँ ओर फैली भीषण अग्नि धूप और लू के बावजूद भीतर से सरस बना रहता है, उसी प्रकार मनुष्य को चारों ओर फैले भ्रष्टाचार, अत्याचार, मारकाट, लूटपाट और खून-खच्चर के बीच भी निराश नहीं होना चाहिए। उन्हें इन विपरीत स्थितियों के बावजूद स्थिर और शांत रहना चाहिए।

5. अवधूत और शिरीष सरस रचनाएँ करते हैं- कैसे?
अवधूत कठिनतम परिस्थितियों में जीते हुए जीवन-रस बनाए रखते हैं तथा सरस रचनाएँ करते हैं। कबीर ऐसे ही अवधूत थे, उन्होंने कठोरतम जीवन जिया। फिर भी उनकी वाणी अमर और 'सरस' है। इसी भाँति शिरीष भीषण लू में से रस खींचता है, फिर भी बहुत सुंदर और कोमल फूल प्रदान करता है।

6. हाय! वह अवधूत आज कहाँ है। ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?
अवधूत आत्मबल के प्रतीक होते हैं, वे देह के लोभ लालच को छोड़कर मन और आत्मा की साधना करते हैं परंतु आज दुर्भाग्य से सभी लोग देह बल, धन बल, माया बल जुटाने में लगे हुए हैं, बड़े-बड़े साधु संन्यासियों से लेकर शिक्षाविदों तक इसी देहयात्रा में शामिल हो गए हैं। ऐसे में लेखक का यह कहना

7. लेखक के अनुसार महाकाल देवता के कोड़ों की मार से कौन बच पाता है?
लेखक के अनुसार महाकाल देवता के कोड़ों की मार से केवल वे ही बच पाते हैं जो ऊर्ध्वमुखी होते हैं, अर्थात् जो हमेशा ऊपर की ओर बढ़ते और चढ़ते रहते हैं। जो नित्य अपना स्थान बदलते रहते हैं और आगे को मुँह करके हिलते डुलते रहते हैं। आशय यह है कि सही-राह पर प्रगति करने वाले लोग ही महाकाल के चोट से बच जाते हैं।

8. लेखक को शिरीष का फूल क्यों पसंद है?
लेखक को शिरीष का फूल उसकी जीवी-शक्ति और संघर्षशीलता के कारण पसंद है। वह जेठ की जलती हुई धूप में भी फूलों से लद सकता है। वह कठोरतम परिस्थितियों में जीवन-रस खींचकर जीवन की अजेयता का मंत्र फूंक कर जीवन जी सकता है। ये मुश्किलों से घबराने की सीख देता है।

9. लेखक ने देश के पुराने राजनेताओं पर क्या टिप्पणी की है।
लेखक राजनीति में नवयुवकों का स्वागत करता है। उसका कहना है कि राजनीति के अखाड़े में पुराने राजनेताओं का समय रहते सन्यास ले लेना चाहिए। तभी नवयुवकों को अपनी क्षमता और प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

10. कबीर को आरग्वध जैसे फूल क्यों पसंद नहीं है।
आरग्वध अर्थात् अमलतास जैसे वृक्ष पंद्रह-बीस दिनों के लिए खिलते हैं, फिर खंखड़ हो जाते हैं। इस कारण कबीर उसे पसंद नहीं करते। अमलतास में जीवनी शक्ति कम होती है। उसके सौन्दर्य की आयु बहुत अल्प होती है। इस कारण कबीर को वह नापसंद है।

11. लेखक ने शिरीष के पुराने फूलों पर क्या टिप्पणी की है।
लेखक ने शिरीष के पुराने फूलों पर टिप्पणी की है कि वे देश के नेताओं के समान ढीठ है जब तक नए फूल-पत्ते उगकर उन्हें धक्का नहीं मारते, वे अपना स्थान छोड़कर जाते ही नहीं। यह उनकी बुरी आदत है।

12. ऐसे दुमदारों से तो लंडूरे भले - आशय स्पष्ट कीजिए
ऐसे दुमदार पक्षी, जिनकी पूंछ सुंदर होती है, किंतु वे क्षणजीवी होते हैं, कबीर को पसंद नहीं। उनका

परिस्थितियों में भी लंबे समय तक जीने की शक्ति रखते हैं।

13. शिरीष वृक्ष के आकार-प्रकार का वर्णन करते हुए उसके उपयोग पर प्रकाश डालिए।
शिरीष वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं, ये भयंकर गर्मी में भी खिले रहते हैं। ये मंगलकारी और सजावटी माने जाते हैं इनके तने बहुत मजबूत नहीं होते, इनकी डालें भी कमजोर होती हैं। प्रायः इन पर झूले नहीं डाले जाते। पुराने समय में बड़े बड़े रईस अपने घर की चारदीवारी के पास इस वृक्ष को लगाया करते थे।

14. शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा गया है?
कालजयी का अर्थ होता है काल को जीतने वाला, लंबे समय तक जीवित रहने वाला। अवधूत ऐसे फक्कड़ साधुओं को कहते हैं जो विपरीत कठिन परिस्थितियों में साधना करते हैं। शिरीष के वृक्ष को कालजयी अवधूत कहने का आशय है- शिरीष का वृक्ष बाहर की लू, उमस और तीखी गर्मी की परवाह किए बिना फूलों से लदा रहता है और मस्त बना रहता है।

15. शिरीष वृक्ष लंबे समय तक क्यों फूला रहता है?
शिरीष वृक्ष बसंत और फागुन में स्वाभाविक रूप से रस ग्रहण करता है। ये ऋतुएँ रसीली होती हैं, परंतु उसकी शक्ति का परिचय हमें तब मिलता है जब वह भीषण गर्मी और तपन में से रस खींचकर लू में भी हरा-भरा बना रहता है। विपरीत स्थितियों में जीवित रहने की यही शक्ति ही उसे सरस बनाए रखती है।

16. लेखक स्वयं को नितांत ठूँठ क्यों नहीं मानता?
लेखक स्वयं को प्रकृति-प्रेमी, सौंदर्यप्रेमी और भावुक मनुष्य मानता है। उसका हृदय किसी भी सुंदर चीज को देखकर तरंगित होता है। इसलिए वह ठूँठ पेड़ के समान नीरस नहीं है बल्कि सरस है।

17. शिरीष के पुष्प ने लेखक को क्यों आकर्षित किया ?
जेठ का महीना था। लेखक वृक्ष के नीचे बैठा था। वहां उसके आगे-पीछे, दायें-बायें, शिरीष के अनेक वृक्ष थे। ऐसी स्थिति में वह सोचने लगा कि इस भयंकर गर्मी में, जब पृथ्वी अग्नि कुंड बनी हुई है, गरम हवाएँ चल रही हैं, तब भी यह शिरीष फूल रहा है इसी विशेषता के कारण लेखक का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हो गया।

18. किसे देखकर लेखक को पुराने की अधिकार-लिप्सा की याद आ जाती है और क्यों याद आती है ?
लेखक को शिरीष के वृक्ष पर पुराने मजबूत फलों को देखकर अधिकार-लिप्सा की याद आती है। यद्यपि पुराने फलों के झड़ने का समय आ गया है, फिर भी वे अपने स्थान पर डटे रहते हैं। समय रहते झड़ते नहीं। इधर आज राजनीति में बूढ़े-बूढ़े नेता नए युवकों को आगे आने नहीं देते।

19. कोमल और कठोर भाव किस प्रकार गाँधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए ?
गाँधी जी महात्मा थे सज्जन थे। सज्जनों के विषय में कहा जाता है कि वे व्यवहार में पत्थर के समान कठोर प्रतीत होते हैं किंतु उनका हृदय पुष्प के समान कोमल होता है। गाँधी जी सामान्य जन की पीड़ा से द्रवीभूत हो उठते थे। उनका हृदय पुष्प के समान कोमल था, किंतु ब्रिटिश सत्ता के अन्याय के विरुद्ध वे जिस प्रकार तन कर खड़े हो जाते थे, तब लगता था कि ये वृद्ध व्यक्ति वज्र से बना है।

20. तुलसी दास ने जीवन के किस सत्य का बोध कराया है?
तुलसी दास ने जीवन के बारे में यही कहा था कि जो फलता है वह झड़ता भी है, अर्थात मृत्यु निश्चित है

जातिप्रथा और श्रम विभाजन

1. डॉ अंबेडकर 'समता' को काल्पनिक वस्तु क्यों मानते हैं? फिर भी इस पर क्यों बल देते हैं?

लेखक मानते है कि हर व्यक्ति जन्म से, सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है। फिर भी वे सभी मनुष्यों को फलने फूलने का बराबर अवसर देना चाहते हैं क्योंकि किसी प्रकार का भेदभाव मनुष्य के विकास में बाधक हो सकता है तथा कार्य कुशलता कम कर सकता है। इस विशाल समाज में व्यवहारिक सिद्धांत तो यही होगा कि सब मनुष्य समान हो। समाज वर्गविहीन हो, जातिविहीन हो, श्रेणी विहीन हो।

2. किस बात को विडंबना कहा गया है?

लेखक ने इस बात को विडंबना कहा है कि आज के जागृत युग में भी कुछ लोग जातिवाद के समर्थक और पोषक बने हुए हैं। वे कार्यकुशलता के लिए इसे आवश्यक मानते हैं। वे जातिवाद का समर्थन करते हैं

3. डॉ अंबेडकर के अनुसार अधिकतम कार्यकुशलता किसप्रकार पैदा की जा सकती है?

डॉ अंबेडकर के अनुसार मनुष्य की कार्य कुशलता को अधिकतम तभी बढ़ाया जा सकता है, जबकि उसे यथा संभव समान अवसर और समान अवसर दिया जा सके। व्यक्ति को जो कार्य दिया जा रहा है वो उसकी रुचि के अनुसार हो।

4. लोग जातिवाद का पोषण किस प्रकार करते हैं?

लोग जातिवाद को कार्यकुशलता के लिए अनिवार्य मानते हैं। इनके अनुसार जातियां कर्म के आधार पर बनी हुई है। ये कर्म का विभाजन करती हैं। यह विभाजन सभ्य समाज के लिए आवश्यक है।

5. डॉ अंबेडकर किस आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं और क्यों?
डॉ अंबेडकर असमान प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं। उनका आशय है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से कम प्रयत्न करता है तो उसे कम सम्मान मिलना चाहिए। अधिक प्रयत्न करने पर अधिक सम्मान मिलना चाहिए।

6. श्रम विभाजन किसे कहते हैं? इसका क्या औचित्य है?
श्रम विभाजन का अर्थ है मानवोपयोगी कार्यों का वर्गीकरण करना। प्रत्येक कार्य को कुशलता से करने के लिए काम-धंधों को बाँट लेना आवश्यक है। कोई खेती करे, कोई मजदूरी करे, कोई फैक्ट्री चलाए, कोई पढ़ाई, चिकित्सा आदि करे। ऐसा करने से हर काम में कुशलता आती है।

7. अंबेडकर ने किसके लिए 'दासता' शब्द का प्रयोग किया है और क्यों?
अंबेडकर ने जाति-प्रथा के आधार पर काम धंधे अपनाने की परंपरा को दासता कहा है। जब कोई काम हम बिना रुचि के मजबूरी में करें तो ये दासता कहलायेगा। इस तरह हम अपने कार्य का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र नहीं होते हैं। उस जाति में पैदा होने के कारण मन न रहते हुए भी हमें वो कार्य करना पड़ता है। ऐसा जीवन दासता के समान है।

8. जाति-प्रथा में क्या बुराई है?
जाति प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है। यह मनुष्य को जन्म से ही किसी काम धंधे में बाँध देती है, इसके कारण मनुष्य अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार काम

इसके कारण समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव खड़ा हो जाता है।

९. अंबेडकर लोकतंत्र के लिए क्या आवश्यक मानते हैं?
अंबेडकर लोकतंत्र के लिए सबका भाईचारा, सबको समान अवसर, सबके साझे अनुभवों का योगदान, सबके लिए श्रद्धा और सम्मान का भाव आवश्यक मानते हैं।

१०. श्रम विभाजन और श्रमिक विभाजन का अंतर स्पष्ट कीजिए
श्रम विभाजन का अर्थ है - अलग अलग पेशों का वर्गीकरण करना। यह स्वाभाविक है। श्रमिक विभाजन श्रमिकों के वर्ग बनाता है। यह लोगों को जन्म से ही किसी काम-धंधे से जोड़ देता है तथा ऊँच-नीच का भेदभाव खड़ा करता है।

११. जन्मजात धंधों में लगे श्रमिक कार्यकुशल क्यों नहीं बन पाते?
जिन लोगों को जाति-प्रथा के कारण जबरदस्ती अपना काम-धंधा अपनाना पड़ता है, वे कार्यकुशलता नहीं बन पाते। कारण यह है कि वे कार्य को रुचिपूर्वक न करके मजबूरी में करते हैं। जबरदस्ती किए जाने के कारण वे दुर्भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। इसलिए वे काम को करने की बजाए टालते हैं। उनका काम में दिल-दिमाग नहीं लगता। इसलिए वे अपनी क्षमता से बहुत कम काम निकाल पाते हैं।

१२. भारत में श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन है-कैसे?
श्रमिकों का स्वाभाविक विभाजन तब होता है जब सभी श्रमिकों को अपनी रुचि और स्वभाव के अनुसार काम-धंधा ढूँढने की छूट मिले। परंतु यदि जन्म और वंश-परंपरा के कारण किसी को खास वर्ग का श्रमिक बनने पर मजबूर किया जाए तो यह श्रमिक-विभाजन अस्वाभाविक कहलाएगा। भारत में जन्म से ही जातियाँ और कर्म तय कर दिए जाते हैं। इसलिए यह श्रमिक विभाजन अस्वाभाविक है।

13. आधुनिक तकनीक और विकास किस प्रकार जाति-प्रथा के सामने चुनौतियाँ खड़ी करते हैं?

आधुनिक तकनीक और विकास के चलते श्रम करने के परंपरागत ढंगों में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरणतया आज छोटे-मोटे कामों से लेकर बड़े-बड़े उद्योग बिजली, मशीनों और कंप्यूटरों से होने लगे हैं। साथ ही, कई नए उद्योग-धंधे शुरू हो गए हैं। वे जाति-प्रथा के किसी साँचे में नहीं आते। तब जाति-प्रथा उनके लिए किसी प्रकार की श्रम कुशलता नहीं जुटा पाती।

14. जाति प्रथा में लेखक ने क्या दोष देखा है?

जाति प्रथा के लेखक ने निम्न दोष बताएँ हैं।

- जाति प्रथा पेशे का पूर्व निर्धारण करती है।
- जीवन भर के लिए मनुष्य को एक पेशे से बाँधती
- पेशा अनुपयुक्त होने पर मनुष्य को भूखा मरना पड़ता है।

15 जाति-प्रथा आर्थिक विकास के लिए हानिकारक कैसे है

आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि सभी मनुष्यों को उनकी रुचि, क्षमता और उपयोगिता के अनुसार कोई भी कर्म और श्रम करने की छूट मिले। छूट ही नहीं, बल्कि उसके लिए बराबर अवसर मिलें। जाति-प्रथा सबके लिए समान अवसरों को तो रोकती ही है, वह मनुष्य की रुचि और इच्छा का भी ध्यान नहीं रखती। इसलिए जन्मजात पेशे को मजबूरी में अपनाने वाले लोग ऊब और लाचारी के साथ काम करते हैं।

16. मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता क्यों पड़ सकती है?

आज उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास के कारण अकस्मात परिवर्तन होने पर पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ जाती है।

जाति-प्रथा श्रम का विभाजन तो करती है, किंतु वह विभाजन मानव की रुचियों और स्वेच्छा पर आधारित नहीं होता। वह विभाजन जन्म और जाति के आधार पर रूढ़ होता है। उसमें बंधन होता है, स्वेच्छा नहीं। सही श्रम-विभाजन वही कहलाता है जिसमें मानव की रुचियों क्षमताओं और अवसरों के लिए पूरी छूट हो। जाति-प्रथा के आधार पर किया गया श्रम विभाजन ऊँच नीच का भेद भी खड़ा करता है।

18. जाति-प्रथा बेरोजगारी का प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण कैसे है?
जाति-प्रथा के कारण अनेक लोग पेशा चुनने को स्वतंत्र नहीं होते। अत: यदि उनके पेशे की माँग या प्रक्रिया या तकनीक में कोई परिवर्तन हो जाए तो वे बेरोजगार हो जाते हैं। उन्हें भूखे मरने की नौबत आ जाती है।

19. जाति-प्रथा के पोषक अपने पक्ष में कौन-कौन से तर्क देते हैं?
जाति-प्रथा के पोषक लोग प्राय: उच्च जातियों से हैं। वे जाति-प्रथा को सभ्य समाज के लिए आवश्यक मानते हैं। उनका तर्क है कि जाति-प्रथा श्रम का विभाजन करती है। श्रम-विभाजन कार्यकुशल समाज के लिए आवश्यक है। अत: जाति प्रथा आवश्यक है।

20. अंबेडकर किस समाज को आदर्श मानते हैं?
अंबेडकर उस समाज को आदर्श मानते हैं जिसमें स्वतंत्रता हो समानता हो और आपसी भ्रातृता (भाईचारा) हो। उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सब लोग एक साथ सारे परिवर्तनों को आत्मसात कर सकें। ऐसे समाज में सभी के हितों में सभी का सहयोग होना चाहिए। सबकी रक्षा के प्रति सचेत होना चाहिए।